International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(2): 292-299

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(2): 292-299
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 18-01-2023
Accepted: 21-02-2023

**प्रदीप कुशवाहा**
पीएच. डी. शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

**Corresponding Author:**
**प्रदीप कुशवाहा**
पीएच. डी. शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

# गंगापुत्रावदानम् के प्रथम तीन सर्गों में अलङ्कार योजना

## प्रदीप कुशवाहा

**सारांश:**
अलङ्कार का शाब्दिक अर्थ सौन्दर्य, उपकरण अर्थात् आभूषण है। काव्यशास्त्र में 'अलङ्कार' एक अति महत्वपूर्ण शब्द है। 'अलम्' पदपूर्वक 'कृ' धातु के प्रयोग से "अलंक्रियते अनेन" अथवा "अलंकरोति" व्युत्पत्ति करने पर करण या भाव अर्थ में 'घञ्' प्रत्यय करने पर 'अलङ्कार' पद निष्पन्न होता है।
अलङ्कार की व्युत्पत्ति निम्न प्रकार है-
(१) **अलङ्करोति अलंकारः** - अर्थात् जो अलंकृत करता है, वही अलङ्कार हैं।
(२) **अलंक्रियते अनेनेत्यलङ्कारः** - अर्थात् वह तत्व जो काव्य को सुन्दर बनाने का साधन हो, वे ही अलङ्कार हैं।
जिस पदार्थ या तत्वों के द्वारा कोई वस्तु सुशोभित की जाए, उसके सौन्दर्य में वृद्धि हो, वह पदार्थ या तत्व 'अलङ्कार' कहलाता है। ये अलङ्कार जिस वस्तु को पहनाए जाते हैं, उसको अलंकृत करते हैं। जिस प्रकार लोक में आभूषण नारी के सौन्दर्य को बढ़ाते हैं, उसी प्रकार अलङ्कार शब्द और अर्थ के माध्यम से काव्य में विचित्रता का आदान करके काव्य के सौन्दर्य में वृद्धि करते हैं इसलिए अलङ्कार को सौन्दर्य का पर्यायवाची कहा गया है।[1]
आचार्य मम्मट ने अलङ्कार की परिभाषा करते हुए स्पष्ट किया है कि -

उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित्।
हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुपासोपमादयः।।[2]

"अर्थात् जिस प्रकार हार आदि अलङ्कार व्यक्ति के शरीर के कण्ठ आदि अंगों में धारण करने के बाद, उसकी शोभा में वृद्धि करते हुए, सुन्दरी के सौन्दर्य में भी वृद्धि करते हैं, ठीक उसी प्रकार जो 'धर्म' काव्य की आत्मारुप 'रस' के अंगरूप में विद्यमान होकर अनुप्रास और उपमा आदि रुप में रस की व्यञ्जना के माध्यम से शब्द एवं अर्थ की शोभा में वृद्धि करते हुए, अंगीरस के भी परम्परा से, न कि साक्षात् रूप से उत्कर्षाधायक होते हैं।" इस शोध प्रपत्र में गंगापुत्रावदानम् महाकाव्य के प्रथम तीन सर्गों में अलङ्कार की दृष्टि से विवेचन किया जाएगा।

**कूटशब्द:** गंगापुत्रावदान, अलङ्कार, निरञ्जन मिश्र, महाकाव्य।

[1] सौन्दर्यमलंकारः। वामन, काव्यालंकारसूत्रवृत्ति १/१/२

[2] मम्मट, काव्यप्रकाश ८/८७

## प्रस्तावना

आचार्य निरञ्जन मिश्र द्वारा रचित गंगापुत्रावदानम् एक आधुनिक एवं ऐतिहासिक महाकाव्य है। यह महाकाव्य मातृसदन आश्रम, हरिद्वार द्वारा सन् २०१३ ई. में प्रकाशित हुआ है। यह तेईस सर्गों में विभक्त है। यह एक ऐसे अद्‌भुत धीर, वीर, कर्मयोगी युवा सन्यासी की जीवन गाथा है जो खनन माफियाओं एवं भ्रष्टाचार में लिप्त प्रशासन के कारण नित्य अवरुद्ध होती हुई भगवती भागीरथी की अविच्छिन्न एवं स्वच्छ धारा की रक्षा के लिए अनशनव्रत रूप तपस्या करते हुए परलोक पथिक हो गये। इस कराल कलिकाल में भगवती भागीरथी के लिए अपना जीवन समर्पित करनेवाला यह अमर हुतात्मा 'स्वामीश्रीनिगमानन्द' हैं जिनका कार्यक्षेत्र जगजीतपुर, हरिद्वार में स्थित 'मातृसदन आश्रम' है। इनके जीवन की अद्‌भुत गाथा नई पीढ़ी को एक नया मार्ग दिखाने वाला है। इनके बलिदान को देखते हुए संन्यासियों ने इन्हें मुक्तकण्ठ से 'गंगापुत्र' की उपाधि समर्पित की है इसमें गंगा की अविरलता और निर्मलता के लिए इस भ्रष्टतंत्र से निरन्तर अनशनरुप युद्धरत कर्मवीर गंङ्गापुत्र स्वामिश्री निगमानन्द जी की गाथा इसमें वर्णित है। इस काव्य के वैशिष्ट्य को देखते हुए कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन ने इसे वर्ष २०१३-२०१४ ई. के लिए सर्वश्रेष्ठ कृति घोषित करते हुए २१ दिसम्बर २०१७ को पुरस्कार देने की घोषणा की तथा १२ फरवरी २०१८ को पुरस्कार प्रदान किया गया। इस महाकाव्य में गङ्गा की अविरलता और निर्मलता के लिए इस भ्रष्टतन्त्र से निरन्तर अनशनरुप युद्धरत कर्मवीर गङ्गापुत्र स्वामीश्रीनिगमानन्द की गाथा इसमें वर्णित है।

## शब्दालंकार

जहाँ चमत्कार शब्द विशेष पर आधारित होते हैं अर्थात् जहाँ शब्द का परिवर्तन करके उसका पर्यायवाचक दूसरा शब्द रख देने पर अलङ्कार नहीं रहता है। वहाँ उस अलङ्कार की स्थिति विशेष रूप से उस शब्द के कारण ही रहती है। इसलिए इसे शब्दालंकार कहते हैं।

## अनुप्रास अलङ्कार-

वर्णों की समानता अनुप्रास कहलाता है।[3] जहाँ वाक्य में या पद में एक समान वर्णो का विन्यास होता है, जिससे एक विशेष प्रकार का चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अनुप्रास अलङ्कार होता है।

- अनुप्रास अलङ्कार 'वर्णानुप्रास' तथा 'पदानुप्रास' भेद से दो प्रकार का होता है। इसमें वर्णानुप्रास के भी 'छेकानुप्रास' एवं 'वृत्त्यनुप्रास' रूप से दो भेद होते हैं।

आचार्य निरञ्जन मिश्र विरचित 'गंगापुत्रावदानम्' महाकाव्य में अनुप्रास अलङ्कार का प्रयोग अत्यधिक मिलता है।

## छेकानुप्रास अलङ्कार

जहाँ अनेक व्यञ्जनों की एक बार आवृत्तिसाम्यता हो या अनेक व्यञ्जनों का एक बार पुनरावृत्ति हो, छेकानुप्रास अलङ्कार होता है।[4] यह अलङ्कार सहृदय जनों को प्रिय है। 'छेक' पद सहृदय सामाजिकों के लिए प्रयुक्त हुआ है।

दिव्याम्बराणां जनताधिपानां दिगम्बराणाञ्च तथा प्रजानाम्।
वाचस्पतीनामधिकारिणां वै निवासभूमिः खलु देवभूमिः।।[5]

यहाँ 'दिव्याम्बराणा, दिगम्बराणाञ्च' तथा 'निवासभूमिः, देवभूमिः' पदों में क्रमशः द,म,ब,र,ण,भ,म वर्णों की एक बार आवृत्ति होने से छेकानुप्रास अलङ्कार है।

यत्रापणानि बहुरत्नविभूषितानि रथ्याश्वभोज्य-रस-गन्ध-सुगन्धिताश्व।
देवाङ्गनाऽपि नव-वस्तु-विलोकनोत्का मुग्धा स्वयं भ्रमति मानववंशजेव ।।[6]

प्रस्तत श्लोक में 'रथ्याश्वभोज्य-रस-गन्ध-सुगन्धिताश्व' पदों में ग,न,ध,र वर्णों की एक बार आवृत्ति हुई है, अतः यहाँ छेकानुप्रास भेद स्पष्ट प्रतीत होता है।

## वृत्त्यनुप्रास अलङ्कार

जहाँ एक वर्ण या अनेक व्यञ्जनों की अनेक बार पुनरावृत्ति हो, वहाँ वृत्त्यनुप्रास अलङ्कार होता है।[7]

गंभीरनादामतिरुद रूपां महीरुहाणामपि कालभूताम्।
तरन्ति बालाः स्वधियैव यत्र सा वन्दनीया खलु देवभूमिः।।[8]

प्रस्तुत श्लोक में 'द' एवं 'म' वर्णों की अनेक बार पुनरावृत्ति होने के कारण यहाँ वृत्त्यनुप्रास अलङ्कार है।

[3] वर्णसाम्यनुप्रासः।मम्मट, काव्यप्रकाश ९/१०३

[4] सोऽनेकस्य सकृत्पूर्वः।मम्मट, काव्यप्रकाश ९/१०५

[5] गङ्गापुत्रावदानम्,१/४७

[6] गङ्गापुत्रावदानम्,२/२६

[7] एकस्याप्यसकृत्परः। मम्मट, का. प्र. ९/१०६

[8] गङ्गापुत्रावदानम्,१/४८

कौबेर-वैभव-विलास-विभूषितानि धौतानि चन्द्रशकलस्नुतशुद्धलेपैः।
श्रीविश्वकर्मकविकल्पितकल्पनाना माकारभूतभवनानि विचित्रितानि।।[9]

प्रस्तुत श्लोक में क, त, न, व वर्णों की अनेक बार पुनरावृत्ति होने के कारण यहाँ वृत्त्यनुप्रास अलङ्कार स्पष्ट प्रतीत होता है।

विशुद्धपर्यावरणा धरेयं चेतोविशुद्धिं दिशतीह नित्यम्।
घटस्य शुद्धिर्यदि चिन्तनीया शुद्धिर्विधेया ननु मृत्तिकायाः।।[10]

प्रस्तुत श्लोक में द,ध,न,य,र,श वर्णों की अनेक बार आवृत्तिसाम्यता होने से वृत्त्यनुप्रास अलङ्कार स्पष्ट प्रतीत होता है।
अनुप्रास अलङ्कार के भेदों में भी अन्त्यानुप्रास अलङ्कार से संबंधित श्लोक 'गंगापुत्रावदान' महाकाव्य में अधिक मात्रा में हैं।

**अन्त्यानुप्रास अलङ्कार**
**आचार्य विश्वनाथ के अनुसार**
यदि पद अथवा पाद के अन्त में योजना के लिए अद्य स्वर के साथ और यथासम्भव अनुस्वार और विसर्ग के साथ व्यञ्जन की आवृत्ति की जाए तो उसे 'अन्त्यानुप्रास' कहते हैं।[11] कारिका में 'यथावस्थम' पद का तात्पर्य है यथासम्भव अनुस्वार और विसर्गयुक्त अक्षरों के साथ। इस अनुप्रास प्रकार का प्राय: पाद और पदों के अन्त में प्रयोग किया जाना चाहिए।
'गंगापुत्रावदानम्' महाकाव्य में अन्त्यानुप्रास अलङ्कार की अति सुन्दरतम छटा दिखाई देती है-

सप्तर्षिसन्ध्यार्चनपुण्यभूमिः
नन्द्यंघ्रिसंक्षुण्णशिलोच्चभूमिः।
मातुर्वसूनामपि जन्मभूमिः सुरासुराणामधिकारभूमिः।।[12]

इस श्लोक में सभी चरणों के पदान्त में 'भूमिः' शब्द का प्रयोग कर कवि ने अन्त्यानुप्रास अलङ्कार की अनुपम छटा दिखाई देती है।

श्रीविक्रमेण रचिता स्वसहोदरस्य पुण्यस्मृतौ कविवरस्य यतीश्वरस्य।
ख्यातस्य भर्तृहरिसंज्ञकपण्डितस्य पौडी हरेर्लसति तद्धि वदन्ति विज्ञाः।।[13]

प्रस्तुत श्लोक में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरणों के पदान्त में 'अस्य' शब्द का प्रयोग हुआ है, अतः यहाँ अन्त्यानुप्रास अलङ्कार स्पष्ट प्रतीत होता है।

**यमक अलङ्कार-**
अर्थ के होने पर, भिन्न अर्थ वाले वर्णों की उसी क्रम से पुनः होने वाली, आवृत्ति को ही 'यमक अलङ्कार' कहते है।[14]

नाम्ना "शिवानन्द" इति प्रगीतः सपत्नपक्षेऽपि सदा समानः।
विधिप्रमाणनुगतप्रमाणे नानन्दितं येन विधिप्रमाण्॥[15]

प्रस्तुत श्लोक में 'विधिप्रमाण' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है। प्रथम विधिप्रमाण का अर्थ ' ब्रह्मा का प्रमाण' तथा द्वितीय विधिप्रमाण का अर्थ 'कानून के प्रमाण' है। यहाँ पर विधिप्रमाण का अर्थ सार्थक तथा भिन्नार्थक है। अतः यहाँ यमक अलङ्कार है।

**श्लेष अलङ्कार**
श्लेष का अर्थ है- चिपकना अथवा जुड़ना। जहाँ अर्थ भेद होने पर भिन्न शब्द समानाकार होने से एक साथ उच्चारण के कारण मिलकर एक हो जाते हैं, वहाँ श्लेष अलङ्कार होता है।[16]
शब्दों पर आधारित श्लेष के दो भेद है- अभङ्ग श्लेष तथा सभङ्ग श्लेष।

**अभङ्ग श्लेष अलङ्कार-**
जब एक ही पद एक से अधिक अर्थों का बोध कराने में सक्षम हो तो वहाँ पर अभङ्ग श्लेष अलङ्कार होता है।
अभङ्ग श्लेष के निम्न उदाहरण प्रस्तुत है -

शृङ्गारभूमी रणकर्कशानां विकासभूमिः कमलेश्वराणाम्।
आवासभूमिर्वचनेश्वराणां प्रवासभूमिः श्रुतिसाधकानाम्।।[17]

---

[9] वही, २/१४
[10] वही,३/१८
[11] व्यञ्जनं चेद् यथावस्थं सहाद्येन स्वरेण तु।
आवत्त्यतेऽन्त्ययोज्यत्वादन्त्यानुप्रास एव तत्॥ विश्वनाथ,साहित्यदर्पण १०/६
[12] वही, १/१४
[13] वही, २/१०
[14] अर्थे सत्यर्थेभिन्नां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः,यमकम्।मम्मट, काव्यप्रकाश १०/११७
[15] गङ्गापुत्रावदानम्, ३/२७
[16] वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद्भाषणस्पृशः।
श्लिष्यन्ति शब्दाः, श्लेषः॥ मम्मट, काव्यप्रकाश ९/११८
[17] वही, १/३

इस श्लोक में 'कमलेश्वराणाम्' पद में श्लेष है। इसके दो अर्थ हैं- एक कमला का अर्थ - 'धनपतियों के लिए' हुआ है तथा दूसरे का अर्थ 'लक्ष्मी के पति' के लिए हुआ है। अतः यहाँ अभङ्ग श्लेष अलङ्कार है।

लताऽबलाअलिंग चाटुकारः सदा प्रमत्त खलु वायुरेव।
एकां प्रतोष्यापरगेहवासं कुर्वन्ति कृष्णा मधुपा द्विरेफाः।।[18]

प्रस्तुत श्लोक में 'मधुपा' शब्द के दो अर्थों हैं- पहला अर्थ 'भँवरा' तथा दूसरा अर्थ 'शराब पीनेवाला' है। अतः यहाँ अभङ्ग श्लेष अलङ्कार स्पष्ट है।

**सभङ्ग श्लेष अलङ्कार**

जब दो अर्थों को ग्रहण करने के लिए प्रयुक्त शब्द को दो प्रकार से तोड़ना होता है तो तब वहाँ पर सभङ्ग श्लेष अलङ्कार होता है।

विदग्धमालोक्य यदा प्रसन्नः धनेश्वरं वीक्ष्य च सावधानः।
कुशासनेनात्र सदैव रुष्ट स्तुष्टश् कोऽयं नवलो महात्मा।।[19]

प्रस्तुत श्लोक में 'विदग्ध' पद के दो अर्थ हैं- पहला 'विद्वान्' तथा दूसरा 'पूर्ण रूप से जला हुआ, पूर्णप्रताडित' है। इसी प्रकार 'कुशासन' पद के दो अर्थ हैं- पहला 'खराब शासन' तथा दूसरा 'कुश का आसन' है। अतः यहाँ एक ही श्लोक में द्विधार्थ होने के कारण सभङ्ग श्लेष अलङ्कार है।

**अर्थालंकार**

अर्थालंकार वहाँ होते है, जहाँ चमत्कार शब्द विशेष पर आधारित न होकर शब्दार्थ अथवा वाक्यार्थ पर आधारित होता है अर्थात् यदि उन शब्दों का परिवर्तन करके उनके समानार्थक दूसरे शब्द प्रयुक्त कर दिये जाये तो भी अलङ्कारो को कोई हानि नहीं होती है ये अलङ्कार शब्दाश्रित न होकर अर्थ के आश्रित होते हैं। इसलिए अर्थालंकार कहलाते हैं। अतः जो शब्दपरिवृत्ति को सहन करता है, वह अर्थालंकार होता है।

अर्थालंकारों के उचित संयोजन से काव्य के सौन्दर्य में वृद्धि होती है, इसीलिए प्राचीन काल से हो कवियों ने अपनी रचनाओं में अपनी सामर्थ्यानुसार अर्थालंकारों का उचित प्रयोग किया है।

**उपमा अलङ्कार**

सहृदय सामाजिकों को सहजता से प्रतीत होने वाला एवं आनन्द प्रदान करने वाला, कवि द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया हो, दो वस्तुओं का साम्य उपमा अलङ्कार कहलाता है।

'गंगापुत्रवदानम्' महाकाव्य में उपमा अलङ्कार के उदाहरण निम्न हैं-

देवभूमि उत्तराखंड का वर्णन करते हुए कवि कहता है-

सचन्दनं साक्षतपूर्णपात्रं सतैलदीपं रमणीयसूत्रम्।
विलोकयन्त्याः स्वसहोदरायाः मातेव धीरा गगनेशभूमिः।।[20]

प्रस्तुत श्लोक में चन्दन, अक्षत, दीपक, रक्षासूत्र की तुलना गगन गत देवों की भूमि से की गई है। अतः इस प्रकार यहाँ 'गगन गत देवों की भूमि' उपमान एवं 'चन्दन, अक्षत, दीपक, रक्षासूत्र' उपमेय, माता की तरह 'धैर्यशालिनी' साधारण धर्म तथा 'इव' उपमावाचक शब्द होने से उपमा अलङ्कार है।

उत्तराखण्ड का वर्णन करते हुए 'हरिद्वार' के वैशिष्ट्य के बारे में कहते हैं-

ध्यानावधानक्षणलब्धवाचो विविच्य चान्विष्य च गूढतत्त्वम्।
संस्थापितो येन सतां विलासः पुण्याश्रमो मातुरिवाञ्चलोऽयम्।।[21]

प्रस्तुत पद्य में मातृसदन आश्रम की स्थापना कैसे की गई है,उसी का वर्णन किया गया है। सावधान होकर ध्यान के समय प्राप्त शब्दों का विवेचन कर, उस गूढ तत्त्वों को खोजकर जिसने सज्जनों के विलास के लिए आश्रम की स्थापना की है। उनका यह आश्रम माता की आँचल के समान है। यहाँ 'माता का आँचल' उपमान तथा 'निगमानंद महाराज का मातृसदन आश्रम' उपमेय है क्योंकि जैसे माता के आँचल में आनन्द की प्राप्ति होती है उसी प्रकार निगमानंद महाराज के मातृसदन आश्रम में भी और जो यहाँ 'विलास' साधारण धर्म है तथा 'इव' उपमावाचक शब्द होने से यहाँ उपमा अलङ्कार स्पष्ट है।

**उत्प्रेक्षा अलङ्कार**

उत्प्रेक्षा अध्यवसायमूलक अभेदप्रधान सादृश्यगर्भ अलङ्कार है। उत्प्रेक्षा का तात्पर्य है - किसी वस्तु को प्रकृष्ट रूप से देखना। कवि द्वारा प्रकृत वस्तु की सम के साथ सम्भावना प्रदर्शित किए जाने पर उत्प्रेक्षा अलङ्कार

[18] वही, १/२३
[19] वही, १/४२
[20] गङ्गापुत्रावदानम्,१/५२
[21] गङ्गापुत्रावदानम् ,३/२८

होता है।[22] यहाँ प्रकृत व सम से तात्पर्य क्रमशः उपमेय व उपमान है। इस प्रकार के स्थलों पर प्राय 'मानो' आदि शब्दों का प्रयोग होता है।

- उत्प्रेक्षा में उपमान कवि कल्पित होता है। अतः इसमें कवि की मौलिक कल्पना शक्ति का बोध होता है।
- क्रियापद के साथ 'इव' के प्रयोग होने पर उत्प्रेक्षा अलङ्कार होता है।
- इनमें मन्ये, शङ्के, ध्रुवं, प्रायः, नूनं ये उत्प्रेक्षावाचक शब्द है।

'गंगापुत्रावदान' महाकाव्य में उत्प्रेक्षा अलङ्कार का प्रयोग किया गया है। निरञ्जन मिश्र की कल्पनाएँ नितान्त मौलिक व उच्चकोटि की है।

उत्तराखंड की विशेषता का वर्णन करते हुए कवि कहता है-

सदा प्रसन्ना हरिता लताऽपि रक्तप्रसूना स्मरतीव भाति।
निशुम्भशुम्भान्तविधायिनीं तां लास्यं दिशन्तीमपि रौद्ररूपाम्।।[23]

सर्वदा प्रसन्न रहनेवाली हरित लता भी लाल पुष्प धारण कर मानो उस निशुम्भ शुम्भ मर्दिनी भगवती का स्मरण करती है, जो लास्य (मधुर नृत्य) का निर्देश करती हुई भी रौद्ररूपा (शत्रुदमन काल में) होती है। इस पद्य में 'हरित लता का लाल पुष्प धारण करने में' उपमेय तथा 'माता भगवती का रौद्ररूप' उपमान है। अतः यहाँ उपमेय का उपमानरूप में सम्भावना उत्प्रेक्षा अलङ्कार है।

उत्तराखंड के जंगलों में बाला का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं-

घने वने तीक्ष्णकुठारहस्ता तृणानि पत्राणि चिनोति बाला।
चित्तं हरन्ती रजनीचराणां विभाति चण्डीव हि कोमलाङ्गी।।[24]

इस पद्य में बाला की निर्भीकता का वर्णन करते हुए कहते हैं कोई कोमलाङ्गी बाला हाथ में कुल्हाड़ी लिये हुए सघन वन में जब घास पत्ते आदि चुनने के लिये जाती है तो ऐसा लगता है कि निशाचरों के चित्त का आहरण करती हुई साक्षात् कोमलाङ्गी चण्डी घूम रही हो। अतः यहाँ 'निशाचरों के चित्त का आहरण करती हुई साक्षात् कोमलाङ्गी चण्डी' उपमान एवं 'कोई कोमलाङ्गी बाला हाथ में कुल्हाड़ी लिये हुए' उपमेय है। अतः यहाँ उपमेय का उपमानरुप में सम्भावना उत्प्रेक्षा अलङ्कार है।

आश्रम का वर्णन करते हुए कहते हैं-

घनाम्रपत्रोदरमध्यदेशा दागत्य रश्मिर्दिवसेश्वरस्य।
संस्पृश्य यस्योदितपुण्यभाजो प्यङ्गं स्वदीप्तिं सृजतीव भाति।।[25]

मातृसदन आश्रम में स्थित वृक्षों का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि घने आम्रवृक्षों के पत्तों के मध्य से सूर्य की किरणें आकर उदित पुण्यवाले इस महात्मा के शरीर का स्पर्श कर मानो अपनी दीप्ति को बढ़ाती है। ऐसे ये किरणें शोभित होती हैं। इस श्लोक में 'महात्मा का शरीर' उपमेय तथा 'किरणें' उपमान हैं। अतः यहाँ उपमेय का उपमानरुप में सम्भावना उत्प्रेक्षा अलङ्कार है।

**रूपक अलङ्कार**

उपमान व उपमेय भिन्न दिखाई देने वाले दो पदार्थों में कवि प्रतिभा द्वारा वर्णित अभेद की प्रतीति ही रूपक अलङ्कार होता है।[26] इसमें उपमेय पर उपमान का आरोप होता है। उपमेय तथा उपमान में अतिसादृश्य को को उपस्थापित करना ही इस अलङ्कार का ध्येय है। रूपक आरोपमूलक अभेदप्रधान सादृश्यमूलक अलङ्कार है।

यहाँ उत्तराखंड के बारे में वर्णन करते हुए कहते हैं-

लताऽबलाऽऽलिङ्गनचाटुकारः सदा प्रमत्तः खलु वायुरेव।
एका प्रतोष्यापरगेहवासं कुर्वन्ति कृष्णा मधुपा द्विरेफाः।।[27]

यहाँ 'लता रूप अबला' का बलात् आलिङ्गन करने में चाटुकार केवल प्रमत्त पवन ही है। एक नयिका को सन्तोष दिलाकर दूसरी नायिका के घर में निवास करनेवाला काला मधुप द्विरेफ ही होता है। इस श्लोक में लता ही अबला है जिसका आलिङ्गन करने में चाटुकार प्रमत्त पवन करता है। यहाँ 'लता' उपमेय व 'अबला' उपमान है। लता पर अबला का अभेदारोप होने से रूपक अलङ्कार है।

छाया छदी रम्यतृणानि शय्या वायुः श्रमस्वेदकणापहारी।
खगाङ्गना गायति यस्य गीतं तस्याश्रमोऽयं जनतापहारी।।[28]

मातृसदन आश्रम का वर्णन करते हुए कवि कहता है जहाँ वृक्षों की छाया ही छत है, रम्य तृण ही शय्या है, वायु ही श्रमोत्पन्न स्वेद बिन्दु को दूर करनेवाला है। खगाङ्गना

---

[22] सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्। मम्मट, काव्यप्रकाश १०/१३६

[23] गङ्गापुत्रावदानम्,१/२५

[24] वही , १/३१

[25] गङ्गापुत्रावदानम्, ३/२४

[26] तद्रूपकमभेदो यः उपमानोपमेययोः।मम्मट, काव्यप्रकाश १०/१३८

[27] गङ्गापुत्रावदानम्, १/२३

[28] वही, ३/८

जिसके गीत गाती है, उसका यह आश्रम लोकों के तापों को दूर करनेवाला है। यहाँ वृक्ष, तृण उपमान हैं तथा छत, शय्या उपमेय हैं। अतः यहाँ वृक्ष की छाया पर छत का आरोप तथा तृण पर शय्या का आरोप हुआ है। अतः इन दोनों में अभेदारोप वर्णन होने से रूपक अलङ्कार है।

## अतिशयोक्ति अलङ्कार

अतिशयोक्ति का अर्थ है अतिशय उक्ति अथवा कथन। अतिशयोक्ति में कवि सौन्दर्य वर्णन में इतना खो जाता है, कि उसकी दृष्टि से उपमेय ओझल होकर केवल उपमान ही उसके समक्ष रह जाता है।

उपमान के द्वारा उपमेय का निगरण अर्थात् निगल जाना, दबाया जाना या अपने में समाहित कर लेना जो अध्यवसान, प्रस्तुत अर्थ का अन्य प्रकार से वर्णन, यदि समानार्थक शब्द लगाकर कल्पना करना तथा कार्य कारण के पौर्वापर्य का विपर्यय अर्थात् कवि प्रतिभा द्वारा वर्णित होने पर अतिशयोक्ति अलङ्कार होता है।[29]

'गंङ्गापुत्रावदान' महाकाव्य में अतिशयोक्ति अलङ्कार के अनेक उदाहरण मिलते हैं-

मुनिः पुराणो निजपुत्रमोहाद् यदा स्वयं कातरतामवाप।
तत्साक्षिणस्ते विलसन्ति वृक्षाः यत्राधुनापि स्मृतिमादधानाः।।[30]

उत्तराखंड का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि जब व्यास ने अपने पुत्र के मोह में कातरता को प्राप्त किया था, उस दृश्य के साक्षीभूत वृक्ष आज भी जहाँ अपनी उन स्मृतियों को धारण किये हुए विराजमान हैं। प्रस्तुत श्लोक में 'वृक्ष' उपमान तथा 'स्मृति को धारण करना' उपमेय है। अतः यहाँ वृक्ष जड़ वस्तु है लेकिन कवि ने जड़ वस्तु द्वारा स्मृतियों को धारण करवाना अतिश्योक्ति अलङ्कार है क्योंकि स्मरणशक्ति चेतन पुरुषों का धर्म है न कि अचेतन का।

## 'उत्तराखंड के निवासियों' के वैशिष्ट्य का वर्णन करते हुए कवि कहता है-

घने वने स्थण्डिलमाश्रयन्ते पतत्प्रपातस्य जलं पिबन्ति।
पतत्रिभिर्ये च मृगाङ्गनाभिस्ते स्वर्गसौख्यं सततं लभन्ते।।[31]

यहाँ वर्णन किया गया है कि सघन वन में जो लोग निवास करते हैं पक्षियों और मृगाङ्गनाओं के साथ मिलकर झरने का जल पीते हैं और वे हमेशा स्वर्ग सुख प्राप्त करते हैं। अतः यहाँ पृथ्वीतल पर ही स्वर्ग सुख का वर्णन किया गया है वह अतिशयोक्ति अलङ्कार है क्योंकि स्वर्ग का सुख पृथ्वी पर प्राप्त नहीं हो सकता है।

यत्राश्रमा नरपतेर्भवनस्य शोभामाहृत्य राजसविलासमुदाहरन्ति।
स्वर्भोग्यभोगभवने यतियोगलीलामालोक्य लास्यललिता त्यजतीह लास्यम्।।[32]

हरिद्वार का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि यहाँ के आश्रम राजाओं के राजमहलों की शोभा को धारण करके अपने राजविलास का प्रस्तुत करते हैं। अपने भवन में सन्यासियों की योगलीला को देखकर स्वयं लास्यललिता (पार्वती) भी अपना लास्य छोड़ देती है। प्रस्तुत श्लोक में उपमान 'राजमहल' के द्वारा उपमेय 'आश्रम की शोभा' तथा उपमान 'पार्वती की लास्यललिता' द्वारा उपमेय 'संन्यासियों की योगलीला' का निगरण कर लिया है, अतः यहाँ अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

## विभावना अलङ्कार

जहाँ हेतुरूप कारण का अभाव होने पर भी कार्य का सम्पादन हो अर्थात् कारणरूप क्रिया का निषेध होने पर भी फल की उत्पत्ति का होना ही विभावना अलङ्कार होता है।[33]

विभावना अलङ्कार से संबंधित श्लोक निम्न हैं-

फलानि पुष्पाणि सदैव यत्र विना प्रयासं सुजना लभन्ते।
कदापि जागर्ति न सा बुभुक्षा नैरुज्यमार्गस्य हि या विहन्त्री।।[34]

उत्तराखंड के निवासियों के बारे में वर्णन करते हुए कवि कहता है कि यहाँ के सज्जन लोग विना प्रयास के ही फल और फूल प्राप्त करते हैं। यहाँ भूख से कोई पीड़ित व्यक्ति नहीं है। प्रस्तुत श्लोक में 'सज्जन लोगों का प्रयास करना' कारण है तथा 'फल और फूल प्राप्त करना' कार्य है। यहाँ विना कारण के कार्य हो रहा है, अतः यहाँ विभावना अलङ्कार है।

विना घनं मत्तमयूरनृत्यं पङ्कं विना पङ्कजलास्यलीलाम्।

---

[29] निगीर्याध्यवसानन्तु प्रकृतस्य परेण यत्।
प्रस्तुतस्य यदन्यत्वं यद्यर्थोक्तौ च कल्पनम् ॥
कार्यकारणयोर्यश्च पौर्वापर्यविपर्ययः। विज्ञेयाऽतिशयोक्तिः सा॥ मम्मट, काव्यप्रकाश १०/१५२

[30] गङ्गापुत्रावदानम्, १/१०

[31] वही, १/३७

[32] वही, २/८

[33] क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना॥ काव्यप्रकाश १०/१६१

[34] गङ्गापुत्रावदानम्, १/१५

दृष्ट्वा पयोदागमनं विचिन्त्य भेकप्रियाणामपि रुद्रगानम्।।[35]

यहाँ मातृसदन आश्रम का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि यहाँ विना मेघ के भी मत्त मयूरों का नृत्य होता है, कमल के विना भी की कमल की लास्य लीला होती है, इसे देखकर मेघ का आगमन जानकर मेढक की प्रियाओं का रुद्रगान चलता रहता है। उक्त श्लोक में 'मेघ' कारण है तथा 'मत्त मयूरों का नृत्य' कार्य है , इसी प्रकार 'कमल' कारण है तथा 'कमल का लास्य लीला' कार्य है। यहाँ विना कारण के कार्य का वर्णन हुआ है, अतः यहाँ विभावना अलङ्कार स्पष्ट है।

## विशेषोक्ति अलङ्कार

यह भी विरोध मूलक अलङ्कार है। विभावना अलङ्कार का उलटा विशेषोक्ति अलङ्कार होता है। यहाँ कारण रहते हुए भी कार्य नहीं होता है।
जहाँ प्रसिद्ध कारण के उपस्थित रहते हुए भी कार्य का न होना पाया जाए, वहाँ विशेषोक्ति अलङ्कार है।[36]

## विशेषोक्ति अलङ्कार से संबंधित श्लोक निम्न हैं

रणे रिपूणां रणकर्कशानां भिनत्ति शस्त्रं न हि यस्य वक्षः।
तत्पादपद्माङ्कनभित्तिभूता सदाऽचलेयं किल देवभूमिः।।[37]

उत्तराखंड का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि युद्ध में शत्रु के शस्त्र भी यहाँ के लोगों के वक्षस्थल को भेद नहीं कर पाता है। ऐसी वीरों के चरण कमलों के चिन्ह से विभूषित यह देवभूमि है। प्रस्तुत श्लोक में 'रिपुशस्त्र' कारण के रहते हुए भी वक्षस्थल भेदन का कार्य नहीं हो रहा है, अतः यहाँ विशेषोक्ति अलङ्कार है।

## अर्थान्तरन्यास अलङ्कार

जब सामान्य बातों का समर्थन विशेष बातों से और विशेष बातों का समर्थन सामान्य बातों से होता है तो अर्थान्तरन्यास अलङ्कार होता है।[38] अर्थात् एक अर्थ का समर्थन करने के लिये दूसरे अर्थ का उपस्थ किया जाता है। यह अलङ्कार अतिरोचकता पूर्वक तथ्य उपस्थापित करता है।

## अर्थान्तरन्यास अलङ्कार से संबंधित श्लोक निम्न हैं -

अधोगतानामिह धूमराशिं निपीय मेघो भवति प्रचण्ड।
पापं परेषां समयप्रभावात् भुङ्क्तेऽत्र लोके सततं हि साधुः।।[39]

उत्तराखंड के निवासियों के बारे में वर्णन करते हुए कवि कहता है कि अपने से नीचे निवास करने वालों के धूएँ को पीकर बादल बहुत अधिक वेगवान् हो जाता है। यह भी सर्वविदित है कि समय के प्रभाव से दूसरों के पापों को सदैव सज्जन लोगों को ही भोगना पड़ता है। यहाँ पूर्वार्द्ध का वाक्य सामान्य वाक्य है। इसका समर्थन करने के लिए उत्तरार्द्ध का विशेष वाक्य रखा गया है। दूसरा वाक्य पहले वाक्यार्थ को पुष्ट करने के लिए ही रखा गया है। इस श्लोक में सामान्य के द्वारा विशेष कथन का समर्थन होने से अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

शक्तिर्यदा पतति विज्ञजनस्य हस्ते नूनं तदैव सफलत्वमुपैति शक्तिः।
पार्थं परीक्ष्य विपिने हि किरातवेश: शक्तिं वितीर्य नहि किं सफलो बभूव।।[40]

जब शक्ति विद्वान् लोगों के पास होती है तो वह सफल होती है। भगवान शिव ने भी अर्जुन की जंगल में परीक्षा करने के बाद ही शक्ति दी थी। यहाँ पूर्वार्द्ध का वाक्य विशेष वाक्य है। इसका समर्थन करने के लिए उत्तरार्द्ध का सामान्य वाक्य रखा गया है। पहला वाक्य दूसरे वाक्यार्थ को पुष्ट करने के लिए रखा गया है। इस श्लोक में विशेष कथन का सामान्य से समर्थन होने के कारण अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

## काव्यलिङ्ग अलङ्कार

यह अलङ्कार कार्य-कारण सम्बन्ध पर आश्रित अलङ्कार है। काव्यलिङ्ग का अर्थ है- काव्य हेतु।
जब कारण की वाक्यार्थता या पदार्थता होती है तो काव्यलिङ्ग होता है।[41] तात्पर्य यह है कि एक वाक्य में कारण और कार्य दोनो वर्णित होते हैं।
काव्यलिङ्गं अलङ्कार से संबंधित श्लोक निम्न हैं-

घने वने नास्ति दिनेशतापो न वा पयोदस्य जलप्रपातः।
प्रयोजनाभावमवाप्य लोकाः पर्णोटजायां सततं वसन्ति।।[42]

---

[35]गङ्गापुत्रावदानम् , ३/३

[36] विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः।मम्मट, काव्यप्रकाश १०/१६२

[37] गङ्गापुत्रावदानम्, १/५०

[38] सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा।। मम्मट, काव्यप्रकाश १०/१६४

[39] गङ्गापुत्रावदानम्, १/२२

[40] वही, २/४८

[41] काव्यलिङ्गं हेतोर्वाक्यपदार्थता ।। का.प्र. १०/१७३

[42] गङ्गापुत्रावदानम्, १/१२

उत्तराखंड के वनों का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि वनों के सघन होने के कारण यहाँ सूर्य की गर्मी और बारिश की बून्दें जमीन तक नहीं पहुँच पाती हैं। अतः लोग पत्तों की कुटियाँ बनाकर ही उसमें रहते हैं। यहाँ पत्तों की कुटियाँ निवास का कारण प्रदर्शनमात्र से काव्यलिङ्ग अलङ्कार है।

लक्ष्मीमवाप्तुं भ्रमणं वनेऽस्मिन् कुचैलिनां वै मधुसूदनानाम्।
विलोक्य जानन्ति जना गुणज्ञा न बाधते कं जलजावियोगः॥[43]

उत्तराखंड के जंगलों का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि धन की प्राप्ति के लिए मलिनवस्त्र को धारण किये हुए मधुसूदन (मधु इकट्ठा करने वाले भगवान विष्णु) भ्रमण करते रहते हैं। ऐसी स्थिति में देखकर गुणवान लोग भी सोचते हैं कि धन का वियोग किसे नहीं सताता है। यहाँ गुणवान लोगों के ज्ञान का कारण मधुसूदन का परिभ्रमण होने के कारण काव्यलिङ्ग अलङ्कार है।

## सन्दर्भ


1. गंगापुत्रावदानम्- मिश्र निरञ्जन, मातृसदन आश्रम, जगजीतपुरम् कनखल, हरिद्वार २०१३
2. गंगापुत्रावदानम् ( प्रथम सर्ग)- मिश्र निरञ्जन, सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली २०१६
3. काव्यप्रकाश- मम्मट, व्या०- शास्त्री श्रीनिवास, साहित्य महार मेरठ १९६०,
4. (४ ) काव्यप्रकाश- मम्मट, व्या०- आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी १९६०
5. निबन्धात्मक काव्यप्रकाश- मिश्र निरञ्जन, सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली २०१४
6. साहित्यदर्पण- आचार्य विश्वनाथ, व्या.- शास्त्री शालिग्राम, मोतीलाल बनारसीदास, नई
7. दिल्ली १९९२
8. साहित्यदर्पण- आचार्य विश्वनाथ, व्या.- विद्यालंकार निरुपण, साहित्य भण्डार, सुभाष
9. बाजार, मेरठ १९७४
10. अलङ्कार-धारणा : विकास और विश्लेषण- मिश्र शोभाकान्त, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,
11. पटना, १९७२


[43] गङ्गापुत्रावदानम्, १/२४